उपनयन संस्कार : क्रियायोग का अभ्यास

क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान पूज्य गुरुदेव के द्वारा व्यक्त विचारों का संक्षिप्त अंश - योगमाता

क्रियायोग भारत की प्राचीनतम आध्यात्मिक शिक्षा है। इसी शिक्षा को प्राचीनकाल में उपनयन संस्कार कहा जाता था। वर्तमान समय में उपनयन संस्कार का जो प्रचलित रूप है, यह एक प्रतीक मात्र है। उपनयन संस्कार का वास्तविक रूप प्रचलित परम्परागत पद्धति से पूर्णतया भिन्न है। उपनयन संस्कार को समझने के लिए 'उपनयन' शब्द को समझना आवश्यक है। उपनयन 'उप' + 'नयन' के संयोग से बना है। 'उप' का अर्थ समीप से है तथा 'नयन' का अर्थ देखने से है। समीप से देखने का संस्कार विकसित करना ही उपनयन संस्कार है। किसी चीज को समीप से देखने पर वह साफ और पूर्णतया स्पष्ट दिखती है। अत: किसी चीज को समीप से देखने का अर्थ है उसके बारे में ठीक-ठीक जानने का प्रयास करना।

क्रियायोग का अभ्यास उपनयन संस्कार को ग्रहण करना है। आज उपनयन संस्कार की प्रचलित विधा में लोग माथे पर टीका लगाना सिर के पीछे चोटी रखना, पीला वस्त्र धारण करना, जनैऊ पहनना आदि परम्पराओं का अभ्यास करते हैं। वास्तव में यह सारी परम्पराएँ क्रियायोग की सूक्ष्म क्रियाओं का प्रतीकात्मक रूप है। माथे पर टीका लगाना क्रियायोग साधना के अन्तर्गत भ्रमध्य दर्शन की क्रिया है। सिर के पीछे चोटी रखने से मनुष्य का ध्यान सिर के पिछले भाग में स्थित मेडुला पर केन्द्रित होता है।

मेडुला को कूटस्थ केन्द्र भी कहा गया है जिसमें ध्यान केन्द्रित होने पर मनुष्य के अंदर पैगम्बर की शक्ति प्रकट होती है। जनेऊ धारण करने पर मुनष्य का ध्यान बार-बार पीठ पर बढ़ता है। पीठ के बीचों-बीच सिर व रीढ़ का स्थान है। सिर - रीढ़ के अंदर 5 ज्ञान की गांठे हैं जिनमें ध्यान बढ़ने पर मनुष्य के अंदर देवी देवताओं की शक्ति प्रकट होती है। इश प्रकार जनेऊ धारण करना अन्दर के देवत्व को जागृत करने का प्रतीक है।

उपनयन संस्कार की प्रचलित विधा में पीला वस्त्र धारण करने का विधान है। पीले रंग में हर चीज साफ-साफ स्पष्ट रूप में दिखायी देती है। पीला वस्त्र पहनने का अर्थ है- हर चीज़ को स्पष्ट रूप में ठीक-ठीक देखना अर्थात ठीक-ठीक समझने की क्षमता का विकास करना। इस प्रकार उपनयन संस्कार क्रियायोग की सूक्ष्म साधना पद्धति है जिसका अभ्यास करने पर मनुष्य अल्पकाल में पूर्ण विकसित होकर ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर लेता है।

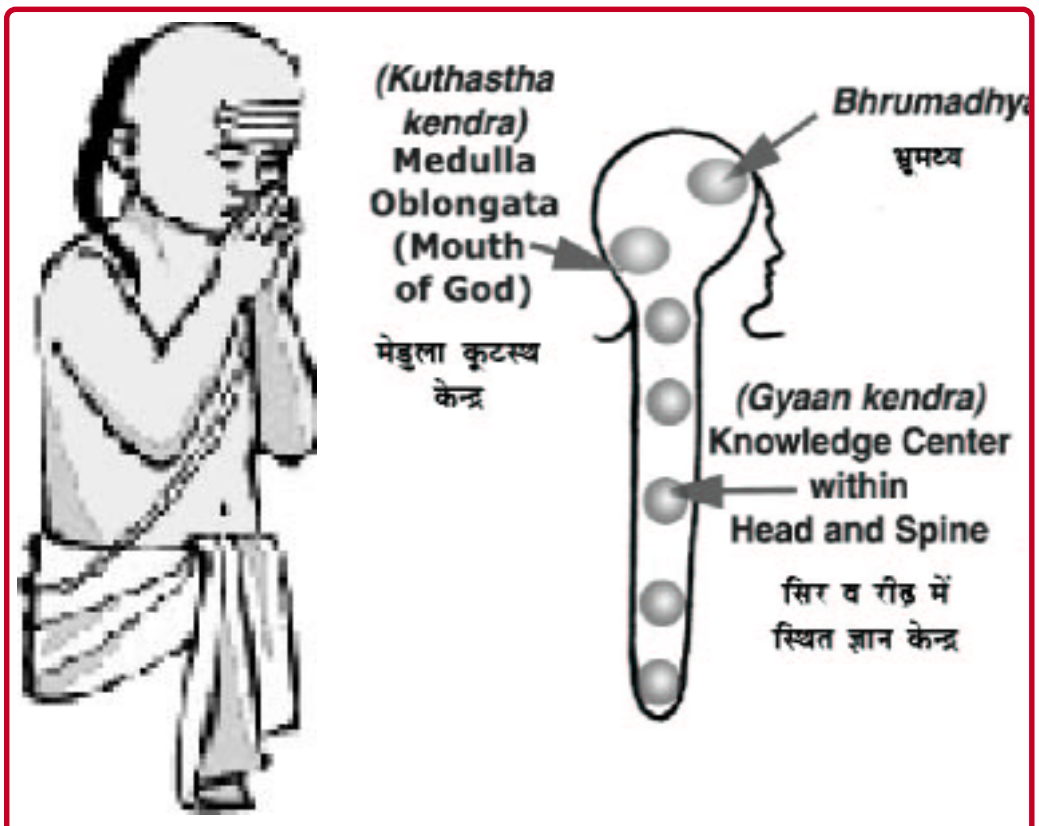

उपनयन संस्कार की प्रचलित विधा में माथे पर टीका लगाना, जनेऊ पहनना, पीला वस्त्र धारण करना, सिर के पीछे चोटी रखना आदि परम्पराओं का अभ्यास कराया जाता है। वास्तव में यह परम्पराएँ क्रियायोग की सूक्ष्म क्रियाओं का प्रतीक है। माथे पर टीका लगाना भ्रूमध्य दर्शन, सिर के पीछे चोटी रखना कूटस्थ दर्शन की क्रिया है। जनेऊ पहनना सिर व रीढ़ में विद्यमान सप्त ज्ञान केन्द्रों में सुषुप्त ज्ञान के जागरण का प्रतीक है। पीले रंग में हर चीज साफ-साफ दिखती है। अत: पीला धारण करने का अर्थ है हर चीज को साफ-साफ अर्थात् ठीक-ठीक देखने की क्षमता प्राप्त करना।

Kriyayoga Is *Upnayan Sanskaar*

As Understood In Class Session of
Guruji Swami Shree Yogi Satyam - Meeramata

*K*riyayoga is the ancient spiritual science of India. The Science of Kriyayoga was known as *upanayan sanskaar* in ancient times. Over time, the practice of *upanayan sanskaar* changed and today, *upanayan sanskaar* is only symbolic of its true form of practice.

To understand how this is so, we have to fist understand the meaning of *upanayan sanskaar*. *Upnayan* can be broken down into "*up*" and "*nayan*". "*Up*" means nearest. "*Nayan*" means to see and understand. "*Sanskaar"* means habit. Therefore, *upnayan sanskaar* means to instill within oneself the habit of seeing and understanding something at the nearest. When we see something at the nearest, we will be able to see it most clearly and as it really is. We will know the truth about it. Therefore, *upanayan sanskaar* is the act of knowing and understanding truth. When we practice Kriyayoga, we lay our concentration in the place nearest to us and attain knowledge of truth. Therefore, the practice of Kriyayoga is adopting the practice of *upanayan sanskaar* in our lives.

Today, there are several traditions that are practiced in *upanayan sanskaar*. They include shaving of the head keeping only a light tail of hair at the posterior surface of the head, placing some markings (*tikka)* on the forehead point, wearing a continuous string (*jeneyu*) across the chest and back and adorning yellow-coloured clothing.

Kriyayoga Practitioners practising Kriyayoga

The above-mentioned traditions are symbolic of the different techniques of Kriyayoga. The tail of hair at the posterior surface of head symbolises concentration on the medulla. The medulla is the most essential part of our body. It is present in the posterior surface of the head and is also known as "*kuthastha kendra*" or "Mouth of God". The medulla works like an antenna attracting the subtle life-force from the astral world into oneself. The life-force within controls all the bodily functions and mechanisms and is the source of everything – peace, patience, happiness, courage, understanding and all knowledge.

When we increase concentration on the medulla, we attain the power of Prophet-consciousness and work like a prophet.

The *tikka* on the forehead symbolises concentration in the *Bhrumadhya*.

The *jeneyu* that is worn across the chest and back, helps to increase concentration on the spine region. In the spine region, there are five knowledge centers. When we increase concentration in this region, we attain the divine powers that can be found in the knowledge centers. In this way, wearing a *jeneyu* is symbolic of awakening divinity within.

Let us now understand the adorning of the yellow clothes. In yellow light, we are able to see everything clearly. The yellow colour represents clarity. Therefore, wearing yellow-coloured clothes is used to represent one who has clarity of vision or one whose wisdom has been awakened.

In this way, *upnayan sanskaar* is truly the practice of the different techniques of Kriyayoga by which one can attain *Brahmagyaan* or knowledge of super-consciousness.